Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VII, Issue-IV
October - December - 2018

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - IV October - December - 2018

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS

अ.क्र.	लेख और लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
१२	नयी दुनिया की परवाज : अली जाफरी की कविता **प्रो. तबस्सुम खान**	७७-८२
१३	एक ओजस्वी राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत कवि : रामधारी सिंह 'दिनकर' **डॉ. सुरेश तायडे**	८३-८९
१४	केदार सिंह की कविता में गाँव बनाम शहर की साँस्कृतिक संरचना **डॉ. प्रिया ए.**	९०-९४
१५	रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना **डॉ. रमा सिंह**	९५-१०२
१६	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय - सांस्कृतिक चेतना **प्रा. अंजना विजन**	१०३-१०७
१७	पंत का छायावादी दृष्टिकोण **डॉ. संगीता वेदप्रताप सिंह ठाकूर**	१०८-११२
१८	यामा काव्य संग्रह में भाव और चिंतन की क्रमबद्धता **डॉ. पूनम पटवा**	११२-१२१
१९	कृष्णा सोबती के उपन्यासों के विविध रुप **नीहारिका उमाकांत देशमुख**	१२२-१२५
२०	भारत की बुजुर्ग पीढ़ियों का एक ही साथ नया पुराना आख्यान और प्रत्याख्यात है - 'समय सरगम' **प्रा. डॉ. रामदास नारायण तोंडे**	१२६-१२८
२१	भारतीय साहित्य और तकषी शिवशंकर पिल्लै 'चेम्मीन (मछुआरे) के विशेष संदर्भ में **अमित कुमार**	१२९-१३३
२२	श्रीलाल शुल्क के रागदरबारी में निहित व्यंग्य : एक अनुशीलन **प्रो. उर्मिला सिंह तोमर**	१३४-१३८
२३	वी. स. खांडेकर के 'ययाति' उपन्यास की प्रासंगिक **पूनम मौर्या**	१३९-१४३

१७. पंत का छायावादी दृष्टिकोण

डॉ. संगीता वेदप्रताप सिंह ठाकूर
हिंदी विभागाध्यक्ष, सोनोपंत दांडेकर महाविद्यालय, पालघर.

आधुनिक युग वादो का युग है। वादो का प्रभाव यहाँ तक बढ गया है कि कवियों को ही नही, आलोचक को भी उनके अंर्तगत रखकर देखा जा रहा है। छायावाद शब्द को लेकर भी विद्वानो में काफी कोलाहल मचा। 1950 मे, 'साहित्य संदेश' जैसे आलोचना के पत्र मे, जिसके संपादक बाबू गुलाबराय जैसे विद्वान और साहित्यिक है, 'छायावाद' पर जब लेख प्रकाशित होता है तो 'छाया' शब्द को लेकर उसीप्रकार जाल बुना जाता जैसे पिछले चालीस वर्षो से बुना जा रहा है। उदाहरण के लिए कुछ पाक्तियों देखिए :–

"छायावाद काव्य कोई आज या कल की वस्तु नही। जब से काव्य है, तभी से छाया है और जब से है, तभी से काव्य। कोई छाया का आनंद लेता है, कोई छाया बनकर छाता है। यही छायावादी क्रम तो छायावादी साहित्य है। सीधे और सरलता से कहना चाहो तो ऐसे कह दो कि जैसे छाया लगाने पर उसकी छाया हमारे ऊपर पडती है, वैसे ही कवि के हृदय की छाया शेष जगत पर पडती है, जिसे हम छायावाद कहते है।

यद्यापि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद शब्द को इतिहास देने को प्रयत्न किया है, पर छायावाद और रहस्यवाद दोनो के संबंध में उनकी ऐसी धारणा थी की ये हमारे काव्य में विदेषी या किसी प्रांतीय भाषा के प्रभाव से कारण आये।

परिभाषा

"प्रकृति मे चेतना के आरोप को छायावाद कहते है। यह आरोप आंलकारिक रुप में ही नही, वास्तविक रुप की भी हो। कहने का तात्पर्य यह है की प्रकृति में चेतना की अनुभूती। मनुष्य को इस बात में कुछ आनंद आता की, वह यह देखे की जैस सुख–दुःख का अनुभव वह करता है, उसीप्रकार और सभी करे। दूसरे शब्दो में प्रकृति मानवीय भावो का आरोप छायावादी है।"

प्रकृति चेतन है या जड यह एक प्रश्न है। पशु–पक्षियों के जीवन की तो हम स्पष्ट रुप से चेतना–सम्पन्न पाते है। लता, पुष्प, वृक्ष आदि का जो वानस्पतिक जीवन है? उसें भी हम जड कैसे कह सकते है। लता और वृक्ष बढते है और अंत में सुखते है। इसीप्रकार फुल विकसित होकर मुरझाते है। अच्छा पृथ्वी है, उसे क्या कहे? वैसे तो पृथ्वी भी आकर्षण से घूमती है एक–एक कण गतिशील है। ऐसी दशा में कवि यदि प्रकृति को जड स्वीकार नही करता और उसे मानवीय क्रिया–कलापो से युक्त देखता है तो हमे उसकी दृष्टि की सहारना करनी पडती है। सच है कवि की दृष्टि जहा पडती है, वैज्ञानिक की अभी वहा न पडी हो, पर काव्य के क्षेत्र में कवि की दृष्टि ही मान्य है, वैज्ञानिक की नही।

अतः छायावाद को समझने के लिए तीन बातो को स्मरण रखना चाहिए।

1. छायावाद का संबध केवल प्रकृति के जीवन से है।
2. इसमे प्रकृति चेतन मानी जाती है।

3. प्रकृति में वे सारी संभावनाएँ प्रदर्शित की जाती है जो नर – नारी के जीवन में किसी भी प्रकार उत्पन्न हो सकती है।

पंत के छायावाद पर कुछ कहने से पूर्व इसी क्षेत्र मे काम करने वाले अन्य छायावादी कवियों की भावना भी थोडी देख लेनी चाहिए। छायावाद – काल में प्रकृति को चेतना से मुक्त देखना एक सामान्य प्रकृति हो गयी थी, यह प्रकृति प्रसाद, महादेवी और निराला में भी पायी जाती है, झरना के आरंभ में ही 'परिचय' नाम से कुछ पंक्तियाँ प्रसाद मे लिखी है –

"उषा का प्राची मे आभास,
सरोरूह का सर बीच विकास,
कौन परिचय था, क्या संबध?
गगन मंडल में असून विलास!
रहे रजनी में कहाँ मिलिंद,
सरोवर बीच खिला अरविन्द,
कौन परिचय था, क्या संम्बन्ध?
मधुर मधुमय मोहन मकरंद!

इसी प्रकार महादेवी रात से बात–चीत करती है, मानो वह इनकी एक–एक बात सुनती और समझती हो।

"ओ विभावरी
चाँदनी का अंगराग,
माँग में सजा पराग,
रश्मितार बांध मृदुल
चिकुर–भार री!
ओ विभावरी !
अनिल धूम देश – देश
लाया प्रिय का संदेश,
मोतियो के सुमन – कोष
वार – वार री!
ओ विभावरी!

'निराला' जी मे तो मलयानिल और कली में प्रेम की छेड़छाड़ भी दिखाई है। इस रोमांटिक चित्र को देखिए–

" विजन – वन – वल्लरी पर
सोती थी सुहागभरी – स्नेह – स्वप्न – मग्न
अमल – कोमल – तनु तरूणी – जुही की कली,
दृग बंद किए, शिथिल – पत्रांक में,
वासन्ती निषा थी,
विरह – विधुर – प्रिया – संग छोड

किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते है मलयानिल।

जहाँ तक पंत जी का संबंध है, उन्होंने इसमें भी सुक्ष्मता और गहराई से प्रकृति के प्राणो को पहचाना है। उन्होने उसे सबसे अधिक व्यापक रूप में मानवीय क्रिया – कलापों से सम्पन्न किया है।

- **रूप और आकार**

छायावाद में प्रकृति का क्रियाशील जीवन ही देखा जाता है, अतः यह अत्यंन्त ही स्वाभाविक है कि जब कवि प्रकृति का वर्णन करे, तो प्राकृतिक वस्तुओ के रूप और आकार को निष्चित रेखाये दे। दूसरे शब्दो में यह प्रकृति का मानवीयकरण हुआ।

नीचे संध्या और चांदनी के दो चित्र देते है–

"शान्त स्निग्ध संध्या सलज्ज मुख
देख रही जल तल में,
नीलारूण अंगो की आभा,
छहरी लहरी दल में,"

– युगवाणी

"नीले नभ के शतदल पर
वर बैठी शारद – हासिनि,
मृदु – करतल पर शशि – मुख धर,
नीरव, अनिसिष, एकाकिनि !

– गुंजन

- **चेतना**

पंत ने प्रकृति की एक – एक वस्तु में चेतना पहचानी है, यह स्पष्ट कर चुके हैं। प्रकृति का उन्होंने शरीर नहीं देखा, मन भी देखा है और देखी है उस मन की भावनाएँ भी। सरिता, सुमन, नक्षत्र, बादल आदि के संपर्क में वे आते है तो उनके रूप–निहारने की अपेक्षा उन्हे उनके हृदय की बात सुनना अधिक भाता है। सरिता के संबध में लिखते है–

"मै भी उसके गीत सीखने
आज गई थी उसके पास,
उसके कैसे मृदुल भाव है,
उज्जवल तन, मन भी उज्जवल!"

– वीणा

लहरो के नृत्य को देखकर उनका हृदय अपूर्व आनंद से भर उठता है –

"छुई मुई सी तुम पश्चात
छूकर अपना ही मृदु गात,
मुरझा जाती हो अज्ञात!"

– पल्लव

- **संबंध**

जिस प्रकार मानव – जगत में, उसी प्रकार प्रकृति जगत में भी एक दूसरे के प्रति संबंध चलाते है। 'वीणा' में अंधकार को रात का सहचर और 'पल्लव' में छाया को वृक्ष की प्रेयसी बतलाया गया है –

अब न अगोचर रही सुजान!
निशानाथ के प्रियवर सहचर!
अंधकार, स्वप्नो के यान!
श्रमित, तपित अवलोक पथिक को
रहती या यों दीन मलिन,
ऐ विटपी की व्याकुल प्रेयसि,
विश्व – वेदना में. तल्लीन!

- **प्रेम**

प्रकृति के प्रेम का जीवन भी बिल्कुल वैसा ही है जैसे नर–नारी का प्रेम के प्रभाव से प्रकृति की एक वस्तु दुसरी वस्तु के निकट कैसे खिंच आती है, यह पंतु जी में 'उत्तरा' में एक स्थल पर प्रदर्शित किया है–

" मिट्टी की सौंधी सुगंध से
मिली सूक्ष्म सुमनो को सौरभ,
रूप–स्पर्श रस शब्द गंध की
हरित धरा पर झुका नील नभ!
क्या समीर मेम लिफ्ट – विटप की
किया पल्लवो में रोमांचित!" – उत्तरा

"विजन निशा में किंतु गले तुम
लगती तो फिर तरूवर के" – छाया : वीणा

- **संक्षेप**

इसप्रकार अब तक कवियों मे प्रकृति को अपने दृष्टिकोण से देखा था, पंत मे उसे निरपेक्ष दृष्टि से देखा, अब तक उसे जड समझा जाता था, पंत में उसे चेतन माना, अब तक उसे किसी न किसी प्रकार मानव जीवन से सम्बन्ध करके रखा गया था, पंत ने उसे स्वतंत्र घोषित किया। प्रकृति के प्रति यह अभिनव – दृष्टिकोण बीसवी शताब्दी की ही विषेषता है। और इस सम्बन्ध में दो मत नही कि प्रकृति की इस मुक्ति में पंत जी का सबसे बडा योगदान है।